शुरुआत एक सफर की...

अगर किसी की ज़िंदगी का सफरनामा आपको बेमिसाल और कारगर लगे, और यदि ये आपके दिल-ओ-दिमाग में बदलाव लाने की हसरत जगा दे, तो यकीन मानिए वो सिर्फ एक जीवनी नहीं बल्कि वो रूहानियत के सफर का रास्ता दिखाती है। ऐसा सफरनामा, अपने आप को बेहतर बनाने का एक ज़रिया बन जाता है और खुद के लिए एक मुकम्मल मकसद भी!

अक्सर जीवनियां महान पुरुषों और महिलाओं की जिंदगी की कहानियां होती हैं, जो हमारे अंदर अपनी-अपनी मंजिलों को पाने का हौसला जगाती हैं। लेकिन यह जीवनी ज़रा अलग है। बेशक, ये एक शख्स की बेहद खास जिंदगी की कहानी है, लेकिन ये उन पैगामों का ज़रिया भी है, जिन्हें इस महान हस्ती ने जिंदगी भर अपने तौर तरीकों से बुना।

क्योंकि उनकी जिंदगी ही उनका संदेश है।
एक संदेश, उनके लिए, जो इसे सुनेंगे।
एक संदेश, उनके लिए भी जो बदलाव के करिश्मे में यकीन रखते हैं।
और, एक संदेश उनके लिए जो अपनी जिंदगियों में यही नीति अपनाना चाहते हैं।

मशहूर शायर निदा फ़ाज़ली ने भी क्या खूब कहा है,

धूप में निकलो घटाओं में नहाकर देखो
ज़िंदगी क्या है किताबों को हटाकर देखो

गुरुदेव की कहानी भी कुछ ऐसी ही है, जो किताबों के दायरों से परे है। उनकी कहानी ना तो खामोशी की चादर ओढ़े हरिआना नाम के एक गांव से शुरू होती है, ना ही उनके जाने के बाद खत्म होती है। उनकी कहानी तो रूह का एक सिलसिला है, जो हज़ारों सालों और कई जन्मों से चल रहा है।

एक शायर के इस कलाम पर ज़रा गौर फरमाइए...

गांव छोड़ के शहर आया था फिक्र वहां भी थी फ़िक्र यहां भी है
वहां तो सिर्फ 'फसलें' ही खतरे में थीं यहां तो पूरी 'नस्लें' खतरे में है

गुरुदेव ने कई जन्म लिए। कुछ जन्मों की जानकारी तो उनके शिष्यों को स्वप्न अवस्था और ध्यान मुद्रा में प्राप्त हुई। वो एक आध्यात्मिक आकांक्षी से आगे बढ़कर शिव के वास्तविक स्वरूप बने, जिसकी उन्हें हसरत थी।

उनकी जिंदगी एक बड़े महोत्सव की तरह थी, जिसमें वो सारी शक्तियां नज़र आईं, जो उन्होंने पिछले कई जन्मों में हासिल कीं... कुछ कमाई, कुछ खोजी और कुछ का एहसास किया।

उन्होंने अपनी पिछली जिंदगियों के वो काम पूरे किए, जो अधूरे रह गए थे और फिर अपने बेशुमार शिष्यों और शागिर्दों को चेतना के उच्च स्तर तक ले जाने में उनके रहगुज़र बने। उनके तकरीबन सभी शिष्यों ने एक ऐसी ऊर्जा की गति हासिल की, जो अपने अंतर्मन की हदों से पार ले जाती है। उनमें से कई ने मुक्ति की प्राप्ति की, जिसका मतलब है ज़िंदगी और मौत से लंबे समय की आज़ादी। उन्होंने अपने तयशुदा मकसद पूरे किए और एक आध्यात्मिक गुरु के रूप में अपना फ़र्ज़ अदा किया।

गुरुदेव ने ना सिर्फ उन लोगों की जिस्मानी और ज़ेहनी तकलीफों को दूर किया, जिनकी तकदीरें उनसे जुड़ी हुई थीं, बल्कि उनमें से बहुत-से लोगों को आध्यात्मिक प्रगति की सीढ़ी पर भी चढ़ाया।

तो जब आप उनकी ज़िंदगी के इस सफरनामे को सुनेंगे, जिसमें उनके मूल पैगामों का गुलदस्ता है, तो बस इस बात का ख्याल रखें कि आपको अपना अध्यात्मिक सफर शुरू करने या उसे रफ्तार देने के लिए किस चीज़ की दरकार है। इसके नतीजे फौरन नहीं मिलेंगे, ना ही तुरंत इसका एहसास होने वाला है। यह किसी ज्ञान के बटन को दबाने की बात नहीं है, बल्कि उसकी प्राप्ति का एहसास जगाने का प्रयास है। यह तो उस काबिलियत को बयां करती है, जो हम सभी में मौजूद है। उनका सफरनामा सारी दुनिया के लिए एक मिसाल है कि वो देखें, सुनें और उसी राह को अपनाएं।

आखिर, क्या जरूरत है नए रास्ते तलाश करने की, जब आपके सामने एक मुकम्मल और आजमाया हुआ रास्ता मौजूद है?

ऐसे में साहिर लुधियानवी का यह मशहूर शेर मौजू होगा,
संसार की हर शय का इतना ही फ़साना है
संसार की हर शय का इतना ही फ़साना है
इक धुंध से आना है इक धुंध में जाना है
इक धुंध से आना है इक धुंध में जाना है

यहां हमने अलग-अलग पॉड्स में गुरुदेव के शिष्यों के साक्षात्कार शामिल किए हैं, जो हमारी एक दशक लंबी कोशिशों का नतीजा है। हमने गुरुदेव के व्यक्तित्व की पहेली सुलझाने की कोशिश की, उन शिष्यों के अल्फ़ाज़ों से, जिनकी जिंदगी उन्होंने हमेशा के लिए बदल दी।

यहां दो लोगों ने इंटरव्यू लिए, जिनमें हमसा और मैं शामिल थे। तो ज़ाहिर है हमारी आवाज़ें भी अलग-अलग होंगी। जी नहीं, यह अलग-अलग आवाज़ें निकालने की कारगुज़ारी कतई नहीं है। माना कि मुझ पर भी गुरुदेव की रहमत है, लेकिन मुझमें यह काबिलियत तो नहीं कि मैं एक मर्द की बुलंद आवाज़ के साथ-साथ एक औरत की सुरीली आवाज़ भी निकाल सकूं।

हिंदी पौडकास्ट में एक तीसरी आवाज़ भी शामिल की गई है, जो मेरी है, वो इसलिए क्योंकि हिंदी पॉडकास्ट की ज़िम्मेदारी मुझ पर सौंपी गयी है.

जब हमने इस लंबे सिलसिले की शुरुआत की तो हमने कहे गए अल्फ़ाज़ों को रिकॉर्ड करने के लिए पुराने डिक्टाफोन्स का इस्तेमाल किया। वक्त के साथ हमारे उपकरण भी बदल गए। यह इंटरव्यूज़ किसी भी जगह और किसी भी समय लिए गए, जिसमें साउंड क्वालिटी की कोई परवाह नहीं की गई। यह तो बस, लिखी हुई जीवनी का एक जरिया बने, जिसे gurudevonline.com वेबसाइट पर मुकम्मल किया गया है। बहरहाल, जब हमें एहसास हुआ इन साक्षात्कारों में तो ज्ञान का खज़ाना है, तो हमने तय किया कि क्यों ना इसे एक सूत्र में पिरोकर आपके समक्ष पेश किया जाए।

जिन लोगों से हमारी गुफ्तगू हुई, वो कोई पेशेवर वक्ता नहीं हैं। कुछ तो गांव और दूरदराज़ के इलाकों में रहते हैं और अपनी स्थानीय बोली बोलते हैं। इनमें से कई तो दीवारों पर लगी तस्वीरों में तब्दील हो गए लेकिन उनकी इज़्ज़त अफज़ाई बरकरार है। गुरुदेव एक ऐसा साझा सूत्र हैं, जिन्होंने इस समूह को संजोए रखा।

तो तराशे हुए शब्दों और लुभावनी संवाद अदायगी की बजाय ईमानदारी और सच्चे जज़्बातों पर गौर फरमाइएगा।

इसमें इस्तेमाल किया गया उपकरण पुराना जरूर है, लेकिन इसके नतीजे नायाब हैं।

एक सरल और हास्यप्रिय महानुभाव की जिंदगी का दस्तावेज भी हल्का-फुल्का होना चाहिए। तो मेरी गुजारिश यही होगी कि आप इस ज़ायके को कबूल करें।(lighter vein)

हमने इन पॉड्स को एक खास क्रम में लगाया है ताकि आप इस सफर के दरमियान आने वाले अनमोल पलों को, संजोते चले जाएं। यदि कुछ शब्द और अल्फ़ाज़ से आप परिचित ना हों तो आपकी मुश्किल सुलझाने के लिए gurudevonline.com वेबसाइट पर एक शब्दकोश भी उपलब्ध है।

तो जब आप इस ऑडियो बायोग्राफी को सुनें तो बातों में छिपे उस पैगाम को सुनने की कोशिश करें, जिसे आप अपनी जिंदगी में उतार सकें और उस पर अमल कर सकें। क्या पता, शायद ये आपकी सोच और जिंदगी को बदलने वाले खजाने की तलाश साबित हो!

तो, आइए इसका लुत्फ उठाएं!

अगर मशहूर शायर ग़ालिब, गुरुदेव का तार्रुफ करते तो शायद कुछ यूं करते,

बस कि दुश्वार है हर काम का आसां होना
आदमी को मयस्सर नहीं इंसां होना
आदमी को मयस्सर नहीं,, इंसां होना